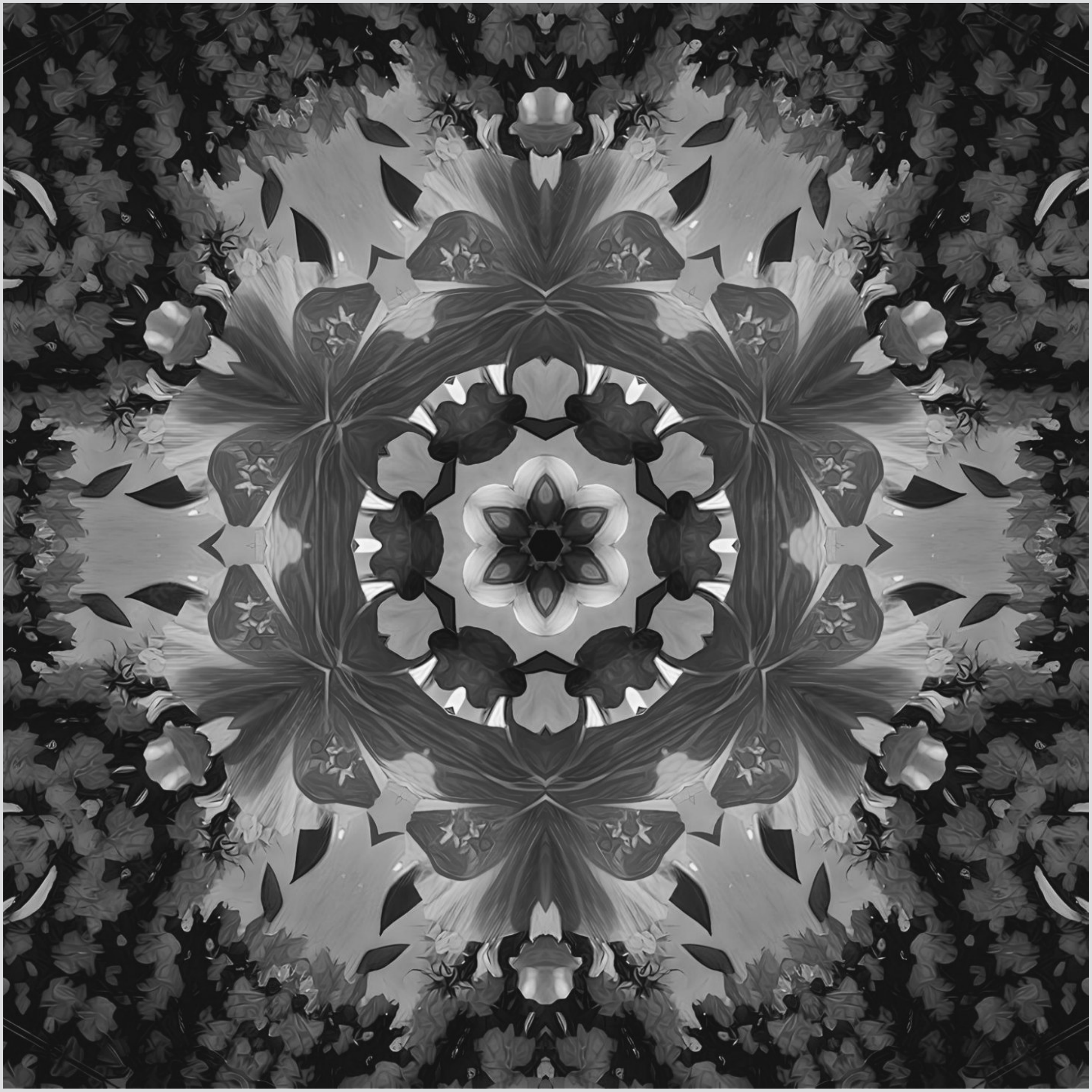
अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका



वर्ष : 50 अंक : 8 श्रावण-भाद्रपद वि.सं. 2080 अगस्त, 2023 सहयोग राशि- अठारह रुपये पृष्ठ-28 **RNI 43602/77 ISSN No.2581-981x**

समिति में कवि नंद चतुर्वेदी जन्मशती कार्यक्रमों का आगाज़



राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में जाने माने लेखकों, कवियों, समीक्षकों और पत्रकारों की एक अत्यंत आत्मीय संगोष्ठी के साथ कवि नंद चतुर्वेदी के जन्मशती वर्ष में होने वाले कार्यक्रमों की श्रृंखला का आगाज़ 29 जुलाई को हुआ।साल भर चलने वाले आयोजनों की श्रृंखला में यह पहला आयोजन समिति ने नंद चतुर्वेदी फाउंडेशन, उदयपुर, के साथ मिल कर किया था।

इसमें भिन्न-भिन्न विधाओं के आठ साहित्यकारों - हेतु भारद्वाज, हेमंत शेष, कृष्ण कल्पित, नन्द भारद्वाज, दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, राजाराम भादू, फारूक़ आफ़रीदी तथा ओम थानवी - के आज के दौर में रचनाकार की भूमिका से सरोकार रखने वाले वक्तव्य हुए।गोष्ठी में यही बात उभर कर आईकि मानवीय स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की आज़ादी के संकुचित हो रहे दायरों के प्रति साहित्यकारों को अलख जगानी होगी।

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति की अध्यक्ष श्रीमती आशा बोथरा ने अपने धन्यवाद उद्बोधन में वाराणसी में छह दशक पुरानी महात्मा गांधी के विचारों पर चलने वाली सर्व सेवा संघ की संस्था के परिसर से पुस्तकों और ऐतिहासिक दस्तावेजों को पुलिस के दस्ते द्वारा बाहर फेंक देने और शासन द्वारा उसे हथियाने की हाल की घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि यह समय सभी लोकतांत्रिक और प्रगतिशील लोगों के एक जुट होने का है जिससे वह समाज बचाया जा सके जिसके लिए नंद चतुर्वेदी की कविताएं और अन्य लेखन था।

इस अवसर पर नंद बाबू के पुत्र अरुण चतुर्वेदी तथा अनुराग चतुर्वेदी व चतुर्वेदी परिवार के अन्य सदस्यों सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

निज़ाम को उर्दू अकादमी का फैलोशिप पुरस्कार



राजस्थान उर्दू अकादमी ने अपना पहला फैलोशिप पुरस्कार जाने-माने शायर शीन काफ़ निज़ाम को दिया है। एक लाख रुपये का यह पुरस्कार अकादमी ने इसी वर्ष शुरू किया है।

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के सदस्य निज़ाम साहब सन् 2010 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित हो चुके हैं।

जोधपुर में 26 नवंबर 1947 पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में जन्मे निज़ाम, जिनका मूल नाम शिव कुमार कल्ला शायद ही कोई जानता हो, जितने लोकप्रिय भारत में हैं उतने ही पाकिस्तान सहित दुनिया के अन्य देशों में भी हैं। उनकी शायरी के संग्रह लम्हों की सलीब, दश्त में दरिया और साया कोई लंबा न था देवनागरी में भी प्रकाशित हुए हैं।

भारत और पाकिस्तान की उर्दू पत्रिकाओं में आलोचनात्मक निबंधों के अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी से उर्दू तथा उर्दू से हिन्दी में आधुनिक कविता का अनुवाद भी किया है। इन्होंने राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर की अनेक संगोष्ठियाँ में पत्र वाचन एवम् शिरकत की है

ज़िंदगी में घुली इनकी ग़ज़लें न केवल आज़ के दौर को शिद्दत के साथ दर्शाती है बल्कि जीने का सलीका भी सिखाती है। ❑

वाणी

विश्वस्वं मातरमोषधीनां ध्रुवां भूमिं पृथिवीं धर्मणा धृताम् ।
शिवां स्योनामनु चरेम विश्वहा ।।

- भू-सूक्तं

उस भूमि को नमस्कार जो हमारा भरण पोषण माता के समान करती है, जिस पर जड़ी-बूटियां उगती हैं, जिसकी शुभता पूरे विश्व में व्याप्त है और जिसे धर्म ने धारण किया हुआ है। ❑

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 50 अंक : 8 श्रावण-भाद्रपद वि.सं. 2080 अगस्त, 2023

क्र म



राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर-302004
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

अध्यक्ष की कलम से

भाईचारे वाली इन्सानी बिरादरी बनायें

अगस्त की 15 तारीख हमें उस दिन की याद दिलाती है जब 1947 में हम अंग्रेजी साम्राज्यवाद से मुक्त हुए। एक राष्ट्र के तौर पर हमने स्वतंत्रता के 75 साल पूरे कर लिए हैं। ऐसे में यह वक्त है जब हम अपनी भाग दौड़ की ज़िंदगी में थोड़ा ठहरकर यह सोचें कि इन वर्षों की यात्रा के दौरान हमने क्या खोया और क्या पाया। यह विचार मन में जरूर आता है कि यदि महात्मा गांधी आज होते तो देश की हालत पर उनके मन में क्या विचार आते और वे क्या करते? हम अंदाजा लगा सकते हैं। वे आज भी लोगों के बीच उसी प्रकार होते जिस प्रकार वे 15 अगस्त 1947 के दिन कलकत्ता के गरीब और पीड़ित लोगों के बीच थे, जब राजधानी दिल्ली में आज़ादी का जश्न मनाया जा रहा था। बापू वहां लोगों के बीच नफरत की दीवार ढहा रहे थे और प्रेम का संदेश दे रहे थे। आज भी बापू होते तो यही करते।

गांधी की असली शक्ति उनकी सत्य और अहिंसा के प्रति अटूट आस्था थी जिससे वे अपनी अंतिम सांस तक रत्ती भर भी कभी नहीं डिगे। वे बल से लोगों को जीतने के पक्षकार नहीं थे। वे लोगों का मन बदलने में भरोसा रखते थे। इसीलिए वे अंतिम सांस तक सभी में भाईचारे की भावना जगाने की अलख में लगे रहे। सभी एक दूसरे के पूरक बनें और प्रत्येक गांव आत्मनिर्भर बने इसी धुन में वे लगे रहे। आजादी पाने का अगस्त का महिना हमें यही याद दिलाता है कि हम गांधी जैसे बनें। पूरे नहीं तो थोड़े ही बनें क्योंकि आजादी के 75 साल बाद भी हम नफ़रतें नहीं मिटा पाये, गुरबत नहीं मिटा पाये, देश की 21 प्रतिशत आबादी के हाथों में कुल संपत्ति को सिमटते देखते रहे। देश की मजबूती करोड़ों युवाओं को अर्थव्यवस्था में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए हम गांधी की बुनियादी शिक्षा की राह पर चल कर ही उनके हाथों को हुनर दे सकेंगे।

दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बन जाने का गर्व करने के साथ हमें कमजोर के साथ होने वाले अपराधों के कोने-कोने से मिलने वाले समाचारों पर शर्मसार भी होना पड़ रहा है। सबकी खुशहाली वाला भारत तब ही बनाना संभव है जब समाज में हिंसा और नफरत न हो। दुर्भाग्य से गांधी के विचारों को लोक स्मृति से मिटा देने के लगातार प्रयास हो रहे हैं। सत्य, अहिंसा और प्रेम के बापू के विचारों का प्रसार करने वाली सर्व सेवा संघ तथा गांधी सेवाग्राम जैसी संस्थाओं को व्यवस्थित तरीके से ध्वस्त करने के वर्तमान प्रयास सबकी आंखों के सामने हैं।

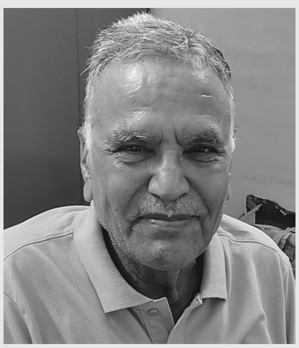


इसलिए अंग्रेजों से आजादी मिलने की याद दिलाने वाले अगस्त का महिना हमें नई ऊर्जा देता है कि हम एक ऐसी इंसानी बिरादरी बनाएंगे जिसका सपना गांधी ने देखा था। इसके लिए समान सोच वाले सभी लोगों को हाथ मिला कर चलना होगा।❑

–आशा बोथरा

मानव विकास ही विकसित भारत की कुंजी

❑



❑

डॉ.देवेन्द्र कोठारी

जनसंख्या विशेषज्ञ डॉ. देवेन्द्र कोठारी देश के समेकित विकास के लिए ऐसी रणनीति चाहते हैं जिसमें युवा पीढ़ी को हुनरवाली शिक्षा देकर नई तकनीकी क्रांति तथा अर्थ व्यवस्था में सक्रिय भागीदारी के लिए तैयार किया जाय। ❑ सं.

हमने 'गरीबी हटाओ' और 'शाइनिंग इंडिया' जैसे नारों पर आजादी के 75 साल बर्बाद कर दिए, लेकिन हम 'विकसित' भारत की नींव नहीं रख सके हैं।

भारत एक ऐसी विकासशील अर्थव्यवस्था है जो 1947 से 'विकसित' होने का सपना देख रही है। संविधान सभा में 14 अगस्त, 1947 की आधी रात को संसद भवन में भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'ट्रिस्ट विद डेस्टिनी' भाषण में कहा था कि वह आधुनिकीकरण से भारत को एक विकसित देश बनाना चाहते हैं।

'आधुनिकीकरण' का आंदोलन शुरू करते हुए नेहरू ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स)) जैसे उच्च शिक्षा संस्थानों की स्थापना की। उन्होंने भारी उद्योगों के अलावा बिजली उत्पादन और सिंचाई के लिए विशाल बांधों पर भी जोर दिया। लेकिन उनकी रणनीति प्राथमिक स्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा या लैंगिक समानता को समाहित करते हुए लघुता की सुंदरता के सिद्धांत पर आधारित नहीं थी। 'बड़े' या 'विशाल' पर उनके जोर ने असमानता और गरीबी को बढ़ा दिया जिसके परिणामस्वरूप 'विकसित' भारत की मजबूत नींव नहीं रखी जा सकी। उनकी मृत्यु (1964) के बाद आने वाली सरकारों ने कमोबेश विकास के उनके इसी 'ढांचे' का अनुसरण किया।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी भी 'विशाल ही सुंदर है' की अवधारणा में विश्वास करते हैं। उनके नेतृत्व में केंद्र सरकार ने कई विकास योजनाएं शुरू की हैं, जिनमें 'स्वच्छ भारत मिशन', 'स्मार्ट सिटी योजना', 'जन धन योजना', 'कौशल भारत मिशन', 'डिजिटल इंडिया', 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' शामिल हैं। 2019 में प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना (पीएम-किसान योजना) शुरू की गई जो सभी छोटे और सीमांत किसानों को न्यूनतम आय सहायता में प्रति वर्ष 6,000 रुपये तक प्रदान करती है। इस 75,000 करोड़ रुपये की योजना का लक्ष्य हर साल भारत में 125 मिलियन किसानों को कवर करना है, चाहे उनकी भूमि का आकार कुछ भी हो। 'विशाल ही सुंदर है' की तर्ज पर, प्रधानमंत्री ने 2047 तक भारत को

विकसित राष्ट्र बनाने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य की घोषणा की है। इसे 15 अगस्त, 2022 को लॉन्च किया गया। उन्होंने इस साल कहा कि भारत नियत तिथि पर या उससे पहले एक विकसित राष्ट्रबनने की राह पर है।

सवाल उठता है कि क्या भारत का समय आ गया है? भारत के बारे में कहा जाता है कि आने वाला समय उसका है। मगर सच तो यह है कि भारत सामाजिक-आर्थिक मोर्चों पर बहुत धीमी गति से आगे बढ़ रहा है। उदाहरण के लिए, भारत की प्रति व्यक्ति आर्थिक वृद्धि दर बहुत धीमी और कम है। पिछले दस (2012-22), पांच (2017-22) और तीन वर्षों (2019-22) में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के लिए इसकी चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) क्रमशः 4.4 प्रतिशत, 2.6 प्रतिशत और 1.8 प्रतिशत रही। इस प्रकार भारत का प्रदर्शन वियतनाम और चीन से भी खराब रहा। यहां तक कि वर्ल्ड इकोनॉमिक रिसर्च, लंदन के अनुसार, भारत के पड़ोसी बांग्लादेश ने भी 2012 और 2022 के बीच 7.9 प्रतिशत की सीएजीआर हासिल की। भारत का सीएजीआर 1947 और 1964 के बीच पूर्व सोवियत संघ जैसे साम्यवादी देशों से भी कम रहा था। जापान की प्रति व्यक्ति जीडीपी के लिए सीएजीआर 7.9 प्रतिशत, के मुकाबले सोवियत संघ के लिए 4.4 प्रतिशत और भारत के लिए 1.68 प्रतिशत रहा। यहां तक कि भारत का रिकॉर्ड फिलीपींस या मलेशिया से भी खराब था।

विश्व अर्थशास्त्र ने एक असमानता सूचकांक भी विकसित

'विशाल ही सुंदर है' की तर्ज पर, प्रधानमंत्री ने 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य की घोषणा की है। इसे 15 अगस्त, 2022 को लॉन्च किया गया। उन्होंने इस साल कहा कि भारत नियत तिथि पर या उससे पहले एक विकसित राष्ट्र बनने की राह पर है।

किया है जो विभिन्न स्रोतों से प्राप्त गिनी गुणांक पर आधारित है और देशों के बीच तुलना के उद्देश्य के लिए एक सूचकांक बनाता है। सूचकांक 0-100 के पैमाने पर है। सूचकांक का उच्च मूल्य अधिक समतावादी समाज को इंगित करता है - और कम मूल्य बताता है कि राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा बहुत कम लोगों के हाथों में है। 2022 में भारत का सूचकांक मूल्य 21.9 है, जो उसे सबसे अधिक असमानता वाले देशों की श्रेणी में रखता है।

आर्थिक विश्लेषण इस बात का समर्थन नहीं करता कि भारत का समय आ गया है। भारत सरकार द्वारा शुरू की गई विकास योजनाओं में से अधिकांश ने विज्ञापन एजेंसियों को कमाई देने के अलावा कुछ भी उल्लेखनीय काम नहीं किया है। नई पनप रही मुफ्तखोरी की संस्कृति देश की दीर्घकालिक आर्थिक संभावना के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है।

विकसित देश का दर्जा हासिल करने के लिए भारत को एक ऐसी रणनीति की बनाने की जरूरत है जो उत्पादकता को बढ़ावा दे। उत्पादकता, दक्षता का एक माप होती है जिसके साथ मानव और भौतिक दोनों संसाधनों को वस्तुओं और सेवाओं में परिवर्तित किया जाता है। सभी प्रकार की आर्थिक गतिविधियों में त्वरित उत्पादन और उच्च उत्पादकता से आर्थिक विकास की तेज़ दर सुनिश्चित की जा सकती है। भारत मानव विकास को बढ़ावा देकर ही उत्पादकता का उच्च स्तर प्राप्त कर सकता है।

खराब शिक्षा, अपर्याप्त प्राथमिक स्वास्थ्य, उचित पोषण की कमी, लैंगिक असमानता और कई अन्य मुद्दों के कारण भारत में ऐतिहासिक रूप से मानव विकास का स्तर नीचा रहा है जिसका यहां के समाज पर गंभीर नकारात्मक और चिंताजनक प्रभाव पड़ा है। इससे कच्ची बस्तियों में लोगों को भयावह जीवन स्थितियों में रहना पड़ रहा है। इसके अलावा विनिर्माण क्षेत्र में मशीनों से काम लिया जाना बढ़ जाने से कम कौशल वाले कामगारों की जरूरत घटती जा रही है और रोजगार बाजार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इन परिस्थितियों के कारण भारत का जनसांख्यिकीय लाभ - इसके 1.4 बिलियन लोगों में से आधे 28 वर्ष से कम उम्र के हैं - एक जनसांख्यिकीय आपदा के रूप में तब्दील हो सकता है, क्योंकि हर महीने दस लाख नए युवा श्रम बल में प्रवेश करते हैं। यदि हम उन्हें उपयुक्त रोजगार प्रदान नहीं करते हैं, तो हमारे पास हर महीने लाखों असंतुष्ट तैयार होते रहेंगे। इसलिए, जिस संदर्भ में हम चर्चा कर रहे हैं, वह कोई ऐसी आपदा नहीं है जो घटित होने का इंतजार कर रही है, बल्कि वह आपदा है जो हमारे सामने है। यहां भारत को

'विकसित' राष्ट्र बनाने में मानव पूंजी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। कुल मिला कर 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाना एक बड़ी चुनौती है। मानव विकास की नीतियां और उनका प्रभावी कार्यान्वयन इस लक्ष्य को पाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होंगी। इनके अलावा सामाजिक सद्भाव और एकता सुनिश्चित करना 'मिशन 2047' की दिशा में पहला कदम होना चाहिए।

हमें जमीनी स्तर पर मानव विकास को बढ़ावा देने के लिए एक रणनीति की आवश्यकता है। इसके लिए एक नई 'एचडीप्लस रणनीति' प्रस्तावित की गई है जो सरकारी स्कूलों पर केंद्रित है। हम सरकारी स्कूलों की कार्यप्रणाली को कैसे सुधार सकते हैं? ऐसा हम इन स्कूलों को सरकारी संस्था बनाने के बजाय सामुदायिक संस्था बनना चाहिए। इन्हें बेहतरीन शिक्षा के संस्थान बनाने के लिए स्वैच्छिकसेवा /दान की तरफ मुड़ना होगा और यंत्र तकनीक की मदद लेने में सक्षम होना होगा। दूसरे शब्दों में, गांव या स्थानीय शासन और महिला समूहों को वित्तीय मदद देकर प्राथमिक विद्यालयों की जिम्मेदारी दी जानी चाहिए।

'एचडीप्लस रणनीति' मानव पूंजी उत्पन्न करने के लिए चार मानव विकास हस्तक्षेपों पर केंद्रित है। वे हैं: प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार; जल और स्वच्छता सहित प्राथमिक स्वास्थ्य को बढ़ाना; बालिकाओं को सशक्त बनाना (लिंग अंतर कम करना); और छोटे परिवार के मानदंडों को बढ़ावा देना।

इस रणनीति का आरंभ सरकारी स्कूल जाने वाले 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों (यानी पहली से छठी कक्षा तक के बच्चे) और उनके परिवारों (एचडीप्लस परिवार) से होगा, जो सरकारों की गरीबों की मदद की विभिन्न योजनाओं का केंद्र बिंदु होंगे। चयनित एचडी हस्तक्षेपों के साथ-साथ सीखने का सक्षम माहौल बनाने के लिए एचडीप्लस परिवारों पर भी काम किया जाएगा; और यह योजना सरकारी एजेंसियों द्वारा पोलियोप्लस अभियान की भांति नागरिक समाज के सहयोग तथा जमीनी स्तर के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की मदद से कार्यान्वित की जाएगी।

एचडीप्लस रणनीति का उद्देश्य मानव योग्यता की नींव रखना है, जो कि शारीरिक और बौद्धिक रूप से पर्याप्त या अच्छी तरह से योग्य होने की गुणवत्ता है। रणनीति यह सुनिश्चित करती है कि 14 साल के बच्चे (8वीं कक्षा के छात्र) आगे की शिक्षा के लिए पढ़ने, लिखने और गणित के साथ-साथ बुनियादी डिजिटल तकनीक में कुशल होकर अच्छी तरह से तैयार हों, जिससे मानव पूंजी निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो सके।

नई तकनीकी क्रांति, जिसे चौथी औद्योगिक क्रांति के रूप में जाना जाता है, का स्वागत करने के लिए अपने को तैयार करने में मदद कर सकती है। यह हमारे रहने, काम करने और एक-दूसरे से जुडने के तरीके को मौलिक रूप से बदल देगी। संक्षेप में, 'एचडीप्लस रणनीति' समावेशी और विकसित भारत के सपनों को हकीकत में बदल देगी। इसी से बहुआयामी गरीब और वंचित आबादी को एक पीढ़ी में विकास के सोपान चढ़ाए जा सकते हैं। भारत को विकसित देश बनाने के लक्ष्य को पाने का यही एक मात्र तरीका है।

भारत में एचडीप्लस का कार्यान्वयन को हम टाल नहीं सकते। यहां एचडीप्लस रणनीति हमें नई तकनीकी क्रांति का स्वागत करने के लिए खुद को तैयार करने में भी मदद कर सकती है, जो 'विकसित' भारत ले लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त करेगी।यह रणनीति मानव विकास दृष्टिकोण पर आधारित है। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि प्रत्येक विकसित या उभरती अर्थव्यवस्था ने शुरुआत में मानव विकास और मानव पूंजी निर्माण पर अपना अधिक समय समर्पित किया है।

यह रणनीति हमें नई तकनीकी क्रांति, जिसे चौथी औद्योगिक क्रांति के रूप में जाना जाता है, का स्वागत करने के लिए अपने को तैयार करने में मदद कर सकती है। यह हमारे रहने, काम करने और एक-दूसरे से जुडने के तरीके को मौलिक रूप से बदल देगी। संक्षेप में, 'एचडीप्लस रणनीति' समावेशी और विकसित भारत के सपनों को हकीकत में बदल देगी। इसी से बहुआयामी गरीब और वंचित आबादी को एक पीढ़ी में विकास के सोपान चढ़ाए जा सकते हैं। भारत को विकसित देश बनाने के लक्ष्य को पाने का यही एक मात्र तरीका है।❑

203 पर्ल माउंट व्यू,
तिलक नगर, जयपुर-5

सोच अलग, साहस जुदा : आज के ये युवा

❑



❑

अंकुर वारिकू

भारत के मध्य वर्ग से आने वाले जनरेशन ज़ेड – यानी 18 से 25 साल – के लोग– पुराने पारंपरिक ढर्रे को तोड़ रहे हैं, लेकिन क्या उनके सपने पूरे होंगे ?इसी की विवेचना करता है यह आलेख। लेखक अंकुर वारिकू अपने को 'इंटरनेट एंटरप्रेन्योर'मानते हैं। ट्विटर और यूट्यूब पर उनके लाखों फ़ॉलोअर हैं। वे बता रहे हैं कि नई पीढ़ी के युवा कैसे पिछली पीढ़ी से अलग सोच रखते हैं।
❑ सं.

हमें लगता है कि नौजवान लड़के-लड़कियां प्रतियोगी प्रवेश परीक्षाओं के लिए तैयारी कर रहे हैं जो उन्हें एक टॉप इंजीनियरिंग या मेडिकल स्कूल में जगह दिलाएगा, वे अपने लिए एक भरोसेमंद करियर बनाने और अपने माता-पिता के सपनों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ये एक स्टीरियोटाइप सोच है।

कई मध्य वर्ग परिवार से आने वाले युवा जिनसे मैंने बात की वे अपने अभिभावकों से सवाल करते हैं। तय ढर्रे से अलग वैकल्पिक रास्ता अपनाने के लिए विद्रोह करते हैं, वो हमेशा सुरक्षित विकल्प ही नहीं चुनना चाहते। सबसे ज़रूरी बात ये है कि वे कभी-कभी इसके लिए एक लंबा रास्ता तय करते हैं।

ये पीढ़ी अलग तरह के कपड़े पहनती हैं, शब्दों का उच्चारण अलग तरीक़े से करती है। जैसे मेरा 22 साल की उम्र का वीडियो एडिटर कहता है कि 'नाइस' का उच्चारण 'नोइस' करने से ये कूल लगता है।' इनमें से कई लोग शादी से पहले कम से कम एक प्रेम संबंध में रह चुके होते हैं। लेकिन अगर इस जेनरेशन के ऊपरी सतह को खुरचा जाए तो भीतर में हम पाएंगे कि ये सभी एक स्थायी आय चाहते हैं।

लेकिन दो साल पहले जब मैंने यूट्यूब और अन्य सोशल मीडिया पर उनके लिए कंटेंट बनाना शुरू किया, तो मुझे लगा कि मैं भारतीय मध्य वर्ग के युवाओं के बारे में जानता हूं। मैंने ऐसे वीडियो बनाए हैं जिन्हें 40 लाख से अधिक युवाओं ने देखा है, उनमें से आधे 18-24 आयु वर्ग के हैं। उनमें से 40 प्रतिशत भारत के 10 सबसे बड़े शहरों के बाहर रहते हैं। वे अंग्रेज़ी समझते हैं लेकिन अपनी मूल भाषा बोलने में अधिक सहज होते हैं। हर दिन, मुझे उनसे सैकड़ों ईमेल मिलते हैं, जो पैसे और करियर से लेकर रिश्तों और मानसिक स्वास्थ्य तक के बारे में होते हैं।

मैंने ख़ुद से प्रशिक्षित हुए एक 15 वर्षीय कोडर के साथ बात की जो वह कॉलेज ड्रॉपआउट है। वह पारिवारिक व्यवसाय को डिजिटल बनाने में अपने पिता की मदद कर रहा है। एक 24 वर्षीय चित्रकार जो छह साल की उम्र से पेंटिंग कर रहा है। एक फ्रीलांसर जो पहले से ही एक फुल टाइम नौकरी की तुलना में तीन गुना

कमा रहा है। और एक अकाउंटेंट जो रात में बीटबॉक्सर बन जाती है।

उन्होंने दुनिया को देखने के नज़रिया के बारे में जो बताया मैं यहां उन कुछ चीज़ों का साझा करता हूं।

जेन-ज़ेड के इस समूह के लिए, कॉलेज केवल नौकरी का रास्ता नहीं है – इसके बजाय, यह अवसरों के लिए एक जगह है। वे सिर्फ़ क्लास या पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रहते। कॉलेज उनके लिए नेटवर्किंग और प्रयोग के लिए एक स्प्रिंगबोर्ड है। यह वह जगह है जहां वे स्टार्ट-अप के शुरुआती प्लान पर विचार कर सकते हैं या लॉन्च कर सकते हैं या बिना किसी वित्तीय बोझ के कई इंटर्नशिप कर सकते हैं।



भारतीय नौजवान हाई स्कूल और कॉलेज के बीच साल भर का अंतराल नहीं लेते। इस तरह के अंतराल ले पाना पश्चिमी देशों के लिए ही संभव है। लेकिन जिन 18 साल के बच्चों से मैं बात करता हूं, वे कहते हैं कि वे अपना जीवन बर्बाद नहीं करना चाहते हैं, जो वे नहीं हैं वह नहीं बनना चाहते। इसलिए वे कुछ महीने या साल लेकर ये पहले तय करना चाहते हैं कि वे आखिर क्या चाहते हैं उसके बाद वे अपने लक्ष्य उस आधार पर तय करते हैं और उसे पाने की कोशिश करते हैं।

जितने भी नौजवान जो अपने जीवन के बीसवें पड़ाव में हैं वो रिलेशनशिप में कमिटमेंट को एक ट्रैप की तरह देखते हैं। वे इससे बचना चाहते हैं, उनके लिए, ख़ुद को जानना-समझना और ख़ुद का मालिक होना किसी और का हाथ थामने से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

इनमें से अधिकांश अपने माता-पिता को आय की स्थिरता पर ध्यान देते हुए देखकर बड़े हुए हैं, लेकिन उन्हें लगता है कि अब एक अलग समय है, व्यापक असमानता है और सपने बड़े हैं और उन्हें पूरा करने के रास्ते भी कई हैं। उनके लिए, पैसा अस्तित्व का स्रोत नहीं है, बल्कि आज़ादी का स्रोत है।

किसी पॉश इलाके में बंगला होना इनका लक्ष्य नहीं है, इसके बजाय, शेयरों और क्रिप्टो में बचत का निवेश करने के बाद एयर जॉर्डन की एक जोड़ी जूतों पर पैसा खर्च करना इनके लिए ज़्यादा अहम है।

उनके लिए सीखने की जगह सोशल मीडिया है और यूट्यूब इस जेन ज़ेड आबादी का स्कूल है। इनमें महत्वाकांक्षा और साहस है। और उनके पास एक गुण है जो उन्हें भारत की पिछली पीढ़ी से अलग करता है, वह है- जोखिम के लिए एक तलब। मिडिल क्लास इंडिया में रिस्क हमेशा से चार अक्षरों वाला एक भद्दा शब्द रहा है। मेरे माता-पिता की पीढ़ी में भी, स्थिरता महत्वपूर्ण थी। वर्क लाइफ़ बैलेंस, करियर फुलफिलमेंट, इंपैक्ट- ये वो शब्द थे जो अभिजात वर्ग इस्तेमाल करता था। लेकिन जेन ज़ेड न केवल अपने लिए उपलब्ध वैश्विक अवसरों से अवगत हैं बल्कि वे इसके लिए हर संभव कोशिश करने से भी कतराते नहीं हैं। वे जानते हैं कि 60 की बजाय 35 साल की उम्र में भी रिटायर होने का एक रास्ता मौजूद है। यही कारण है कि सफल स्टार्ट-अप के तेज़तर्रार फ़ाउंडर- पेटीएम के विजय शेखर शर्मा हों या ओयो होटल चेन के फ़ाउंडर रितेश अग्रवाल, ये भारत के सबसे कम उम्र के अरबपति आइकन बन गए हैं।❑

लेख

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आजादी

❑



❑

राजेन्द्र भाणावत

राजेन्द्र भाणावत ने प्रस्तुत आलेख में असमानता, असुरक्षा एवं गुलामी की मानसिकता से हमारे आजाद न हो पाने पर चिंता व्यक्त करते हुए कुरीतियों से निजात पाने की बात की है।❑ सं.

हम अपनी आजादी का 75 वां वर्ष अमृत - महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। वैसे तो 75 वर्ष किसी देश के लिए बहुत बड़ा कालखंड नहीं है, किंतु यह एक अवसर तो हमें प्रदान करता ही है कि हम आत्मावलोकन एवं विश्लेषण करें कि वर्तमान में देश किस मोड़ पर खड़ा है ?

यह सही है कि राजनीतिक रूप से तो आजादी हमें 15 अगस्त 1947 को मिल गई थी जब हम अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुए थे। अर्थिक और सामाजिक आजादी की कहानी तो उसके बाद प्रारंभ होती है ।

देशवासियों को अर्थिक और सामाजिक आजादी सुनिश्चित करने के लिए संविधान का निर्माण किया गया। संविधान के माध्यम से यह सुनिश्चित करना था कि देश के सभी नागरिकों को विभिन्न प्रकार के शोषण, अत्याचार, असमानता , भुखमरी, गरीबी आदि से आजादी मिले। देश के वर्तमान प्रधानमंत्री इस बात का बखान करते नहीं थकते कि भारत विश्व में सबसे तेज गति से बढ़ने वाली एवं दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और शीघ्र ही हम तीसरे स्थान पर पहुंच जाएंगे।

गत 75 वर्षों में देश में कई नई बातें हुई हैं. दुनिया की हर कम्पनी की कारें सड़कों पर सरपट दौड़ती देखी जा सकती हैं, चमचमाती हुए 10-12 लेन के बड़े- हाईवे हैं, बहुमंजिला भव्य इमारतें हैं, बुलेट ट्रेन चलने वाली है, सबसे अधिक मोबाइल देश में हैं, आईआईटी, एम्स और आई आई एम हैं, आधुनिकतम सुविधा वाले निजी विश्वविद्यालय हैं, पांच सितारा होटल जैसे अस्पताल हैं, अंतरिक्ष में रॉकेट भेजे जाने लगे हैं।

इन सब के बावजूद , हमें वर्तमान परिप्रेक्ष्य को अवश्य ध्यान में रखना होगा , जिसके बिना कोई भी विश्लेषण एकांगी होगा। हमें यह स्वीकारना होगा कि प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से भारत दुनिया के सबसे पिछड़े देशों में हैं, अमीर और गरीब की खाई बहुत बढ़ी है, देश की अत्यंत विकसित आधारभूत संरचना का लाभ लेने के लिए सामान्य नागरिक की क्रय शक्ति नहीं है। हम चाहे बुलेट ट्रेन बना लें अथवा 12 लेन वाले राष्ट्रीय राजमार्ग, जब तक यात्रा करने वाले नागरिकों के पास टिकट खरीदने के पैसे ही नहीं होंगे तो उनके लिए इस सारे विकास का क्या अर्थ रह जाता है? भारत विश्व के उन

देशों में हैं जहां असमानता सर्वाधिक है, पूंजी का केंद्रीकरण कुछ हाथों में तीव्र गति से हुआ है। किसी भी सामान्य परिवार के सदस्य के लिए यह संभव नहीं है कि अपने बच्चों को अच्छे स्तर की शिक्षा दिला सके।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अवसर समान रूप से सब को उपलब्ध नहीं होने का ही यह परिणाम है कि गरीब और अमीर की खाई और चौड़ी होती जा रही है, बेरोजगारी चरम सीमा पर है.सामान्य व्यक्ति जो वस्तुएँ खरीदता है, उनके दाम उसकी पहुंच से कहीं अधिक हैं। आज भी भारत में 25 करोड़ से अधिक लोग निरक्षर हैं. इनके लिए डिजिटल और सूचना क्रांति अर्थहीन है।

देश में जहां एक ओर चमचमाते हुए पांच सितारा होटल की तरह निजी कॉर्पोरेट अस्पताल हैं, वहीं दूसरी ओर सड़क पर प्रसव कराने को मजबूर निर्धन महिला भी है। आधे से अधिक बच्चे कुपोषित हैं। हम देशवासियों को अशिक्षा, बीमारी और कुपोषण से आजादी नहीं दिला पाए हैं। अधिसंख्य जनसंख्या को पर्याप्त रोजगार के साधन उपलब्ध नहीं करा पाने के कारण सरकार को लगभग 80 करोड व्यक्तियों को मुफ्त राशन देने की व्यवस्था करनी पड़ी है। शोषण, जातिवाद, धर्मांधता, अंध विश्वास से देश वासियों को मुक्ति नहीं दिला पाए हैं। धर्म और जाति के आधार पर विभाजन और विद्वेष तो पहले की तुलना में अधिक हुआ है. हमें परस्पर घृणा, हिंसा, शोषण, अत्याचार, असुरक्षा से आजादी नहीं मिल पाई है। आज भी दलित व्यक्ति को प्रभावशाली व्यक्तियों के घर के सामने जूते पहन कर जाने या घोड़ी पर बैठ कर जाने पर पीट कर मार देने की घटनाएँ नियमित रूप से पढ़ने- सुनने को मिलती हैं। जहां तक न्याय का प्रश्न है, वह भी उन्हीं को सुलभ है जो या तो सत्ता में हैं या फिर संपन्न हैं। कानून भले ही पूरे देशवासियों के लिए एक जैसा हो किंतु उसका क्रियान्वयन सबके लिए अलग-अलग प्रकार से होता हुआ हम रोज देखते हैं ।

देशवासियों को अर्थिक और सामाजिक आजादी सुनिश्चित करने के लिए संविधान का निर्माण किया गया। संविधान के माध्यम से यह सुनिश्चित करना था कि देश के सभी नागरिकों को विभिन्न प्रकार के शोषण, अत्याचार, असमानता , भुखमरी, गरीबी आदि से आजादी मिले।

अभिव्यक्ति की आजादी संविधान ने तो दी है किन्तु सरकार की आलोचना को देश द्रोह माने जाना लगा है। खाने, पीने, रहने, बोलने की आजादी भी अब तक सुनिश्चित नहीं कर पाए हैं।

भ्रष्टाचार पहले से कहीं अधिक बढ़ा है। ऊपर से लेकर नीचे तक कोई काम सुविधा शुल्क के बिना सम्भव नहीं है, चाहे नया व्यवसाय आरंभ करना हो, सरकार से एन ओ सी लेनी हो, खाते की नकल लेनी हो, एफ आई आर दर्ज करानी हो या फिर स्वयं की भूमि पर मकान ही क्यों न बनवाना हो.

ऐसी परिस्थिति में हमें इस पर विचार करना ही होगा कि इतने अच्छे संविधान के बावजूद हम ऐसी स्थिति में कैसे पहुंच गए? डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने संविधान सभा में कहा था कि चाहे संविधान कितना भी अच्छा क्यों न हो, उसको उपयोग करने वाले लोगों की नीयत सही नहीं होगी तो वह भी बेकार सिद्ध होगा. यही होता हुआ देख रहे हैं. संसद, विधानसभा में पहले बहुत अच्छे स्तर की बहस देखने को मिलती थी, वहीं आजकल ये सदन, सदस्यों के आपसी आरोप-प्रत्यारोप, बदजुबानी यहां तक कि हाथापाई के अड्डे बन कर रह गए हैं.

गुलामी की बेड़ियों से राजनीतिक रूप से तो हम अवश्य आजाद हो गए, लेकिन विभिन्न प्रकार की सामाजिक कुरीतियों से अधिकांश नागरिक अभी तक आजाद नहीं हो पाए हैं .हमारी चुनाव व्यवस्था में धन -बल, सत्ता- बल और बाहुबल के प्रयोग से आजाद होना तो दूर की बात है, इनमें बढ़ोतरी देखी जा रही है. शिक्षा और स्वास्थ्य का कार्य जहां किसी समय पुनीत कार्य माना जाता था वहीं आज यह विशुद्ध व्यवसाय का रूप ले चुका है. इसी कारण अधिकांश जनसंख्या अच्छी शिक्षा और अच्छे स्वास्थ्य से वंचित है। हां, यह अवश्य है कि बलात्कारियों को बलात्कार करने की, शोषक को शोषण करने की, व्यापारियों को कालाबाजारी करने की, बाहुबलियों को अपना बाहुबल दिखाने की, पुलिस को निरपराध, निहत्थे लोगों पर अपना डंडा चलाने की आजादी पूरी है।

अमृत महोत्सव का सबसे बड़ा उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि हम देश को वास्तविक रूप से इन सभी

कुरीतियों से अवगत करा सकें और उनसे मुक्ति दिला सकें। यह काम न केवल सरकारों को और राजनीतिक दलों को , अपितु प्रत्येक नागरिक को मिलकर करना होगा। स्वाभाविक है इसकी जिम्मेदारी, जो सक्षम है ,उसी की अधिक होगी।

वर्तमान में तो हम यही कह सकते हैं कि देश के सभी नागरिकों को भय, भूख, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, बीमारी, कुपोषण, शोषण, असमानता, असुरक्षा से मुक्ति दिलाने में हम आंशिक रूप से ही सफल हो पाए हैं। सबसे अनिवार्य तो गुलामी की मानसिकता से मुक्ति है. पहले हम गोरे अंग्रेज़ों के गुलाम थे, अब काले अंग्रेजों के गुलाम हो गए हैं.।

अमृत महोत्सव का सबसे बड़ा उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि हम देश को वास्तविक रूप से इन सभी कुरीतियों से अवगत करा सकें और उनसे मुक्ति दिला सकें। यह काम न केवल सरकारों को और राजनीतिक दलों को , अपितु प्रत्येक नागरिक को मिलकर करना होगा।

आईए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि जब हम आजादी का शताब्दी वर्ष 2047 में मनाएँ तब देश का प्रत्येक नागरिक अर्थिक और सामाजिक रूप से पूर्णतया स्वतंत्र होगा।❑

411, फाउंटेन स्क्वायर, ललित होटल के पीछे, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर



आजादी का सितारा अस्त न हो

❑

जवाहर लाल नेहरू

पंडित नेहरू ने कहा था कि ये हमारे लिए एक सौभाग्य का समय है, एक नए तारे का जन्म हुआ है, पूरब में आजादी का सितारा। एक नयी उम्मीद का जन्म हुआ है, एक दूरदर्शिता अस्तित्व में आई है। काश ये तारा कभी अस्त न हो और ये उम्मीद कभी धमिल न हो। हम हमेशा इस आजादी में खुश रहें। आने वाला भविष्य हमें बुला रहा है।

हमें कहां जाना चाहिए और हमारी क्या कोशिश होनी चाहिए, जिससे हम आम इंसान, किसानों और कामगारों के लिए आजादी के और अवसर ला सके, हम गरीबी, अज्ञान और बीमारियों से लड़ सकें, हम एक सुखी, लोकतांत्रिक और प्रगतिशील देश का निर्माण कर सकें, और हम ऐसी सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना कर सकें जो हर एक इंसान के लिए जीवन की पूर्णता और न्याय सुनिश्चित कर सके।

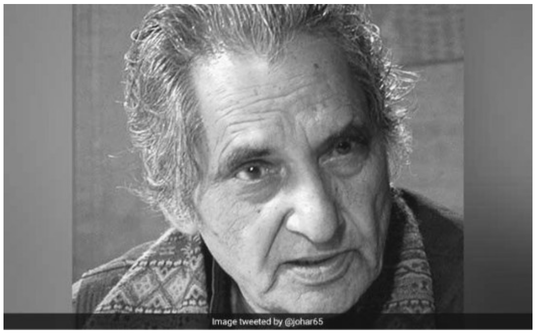
हमें बहुत मेहनत करनी होगी। कोई तक तक चैन से नहीं बैठ सकता जब तक हम अपने वादे को पूरा नहीं कर देते। जब तक हम भारत के सभी लोगों को उस गंतव्य तक नहीं पहुंचा देते जहां भाग्य उन्हें पहुंचाना हाता है। हम सभी एक महान देश के नागरिक हैं

जो तेजी से विकास की कगार पर हैं और हमें उस ऊंचे स्तर को पाना होगा। हम सभी चाहे किसी भी धर्म के हों, समानरूप से भारत की संतान हैं, और हम सभी के बराबर अधिकार और दायित्व हैं। हम छोटी सोच को बढ़ावा नहीं दे सकते, क्योंकि कोई भी देश तब तक महान नहीं बन सकता जब तक उसके लोगों की मानसिकता या काम संकीर्ण है।

विश्व के देशों और लोगों को शुभकामनाएं भेजिए और उनके साथ मिलकर शांति, स्वतंत्रता और लोकतंत्र को बढ़ावा देने का वचन लिजिये। हम अपनी प्यारी भूमि, प्राचीन, शाश्वत और निरंतर नवीन भारत को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और एकजुट होकर नए सिरे से इसकी सेवा करते हैं।

जय हिंद। ❑

आजादी के तराने



अब तो मज़हब...

अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाए
जिस में इंसान को इंसान बनाया जाए

जिस की ख़ुशबू से महक जाए पड़ोसी का भी घर
फूल इस क़िस्म का हर सम्त खिलाया जाए

आग बहती है यहाँ गंगा में झेलम में भी
कोई बतलाए कहाँ जा के नहाया जाए

प्यार का ख़ून हुआ क्यूँ ये समझने के लिए
हर अँधेरे को उजाले में बुलाया जाए

मेरे दुख-दर्द का तुझ पर हो असर कुछ ऐसा
मैं रहूँ भूका तो तुझ से भी न खाया जाए

जिस्म दो हो के भी दिल एक हों अपने ऐसे
मेरा आँसू तेरी पलकों से उठाया जाए

गीत अनमन है ग़ज़ल चुप है रुबाई है दुखी
ऐसे माहौल में 'नीरज' को बुलाया जाए

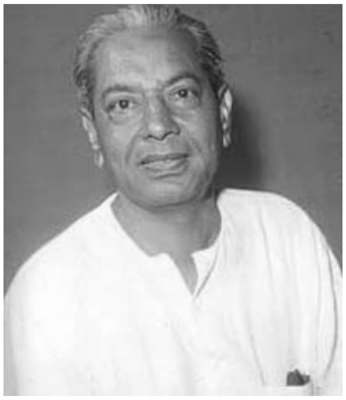
❑ – नीरज

अभी कुछ बोल

बोलना हो तो
अभी कुछ बोल
फिर नहीं आ पाए यह संजोग
या बचें बहरे नपुंसक लोग
इस तरफ़ या
उस तरफ़ मत देख
खोल खिड़की, द्वार
कुछ तो खोल
हर इबारत में लिखा है क्लेश
हर इबारत में छिपा विद्वेष
इन बज़ारों में
लगा है देख
सिर्फ़ कुछ
रंगीनियों का मोल
यह धुआँ, निर्लिप्तता पाखंड
जल रहे चारों तरफ़ भूखंड
भूख के मारे हुए हैं लोग
देख कुछ इतिहास
कुछ भूगोल

❑ – नन्द चतुर्वेदी





चलो गीत गाओ

चलो गीत गाओ, चलो गीत गाओ।
कि गा-गा के दुनिया को सर पर उठाओ।
चलो गीत गाओ, सबेरा हुआ है।
कि दुनिया में अपना भी, डेरा हुआ है।
अभागों की टोली, अगर गा उठेगी।
तो दुनिया पे दहशत, बड़ी छा उठेगी।
सुरा-बेसुरा, कुछ न सोचेंगे आओ।
कि जैसा भी सुर पास में है चढ़ाओ।
चलो गीत गाओ...
अगर गा न पाये, तो हल्ला करेंगे।
इस हल्ले में मौत, आ गयी तो मरेंगे।
कई बार मरने से जीना बुरा है।
कि गुस्से को हर बार पीना बुरा है।
बुरी जिन्दगीको, न अपनी बचाओ।
कि इज्जत के पैरों पे इसको चढ़ाओ।
चलो गीत गाओ...
अगर गा न पाये, तो हल्ला करेंगे।
इस हल्ले में मौत, आ गयी तो मरेंगे।
कई बार मरने से जीना बुरा है।
कि गुस्से को हर बार पीना बुरा है।
बुरी जिन्दगीको, न अपनी बचाओ।
कि इज्जत के पैरों पे इसको चढ़ाओ।
चलो गीत गाओ... ❑

– भवानीप्रसाद मिश्र

नौजवान आओ रे

नौजवान आओ रे, नौजवान आओ रे।
लो कदम बढ़ाओ रे, नौजवान आओ रे।।

ऐ वतन के नौजवान, इस चमन के बागवान।
एक साथ बढ़ चलो, मुश्किलों से लड़ चलो।
इस महान् देश को, नया बनाओ रे।।
नौजवान आओ रे...
धर्म की दुहाइयां, प्रांत की जुदाइयां।
भाष की लड़ाइयां, पाट दो ये खाइयां।
एक मां के लाल, एक निशां उड़ाओ रे।।
नौजवान आओ रे...
एक बनो नेक बनो, खुद की भाग्यरेख बनो।
सर्वोदय के तुम ही लाल, तुमसे यह जग निहाल।
शांति के लिए जहां को तुम जगाओ रे।
नौजवान आओ रे...
मां निहारती तुम्हें, मां पुकारती तुम्हें।
श्रम के गीत गाते जाओ, हंसते-मुस्कराते जाओ।
कोटि कंठ एकता के गान गाओ रे।।
नौजवान आओ रो...। ❑

– बाल कवि वैरागी





भूल-सुधार

जुलाई, 2023 अंक में मध्य पृष्ठों पर छपी कविताओं के लेखक श्री सत्यदेव संवितेन्द्र का चित्र और परिचय तो छप गया पर उनका नाम भूलवश नहीं छप सका। इसका हमें खेद है।

ऐसी स्वतंत्रता बेमानी है

❑



❑

महात्मा गांधी

महात्मा गांधी की दृष्टि में व्यक्ति की स्वतंत्रता अमूल्य है। वे व्यक्ति को महत्व देते थे। उनका मानना था कि यदि भारत यहां के दीनतम प्राणियों को स्वतंत्रता से जीने की गारंटी नहीं देता है तो उसे स्वतंत्र भारत नहीं कहा जा सकता। ❑ सं.

धीमी स्वतंत्रता जैसी कोई चीज नहीं है। स्वतंत्रता तो जन्म के समान है। जब तक हम पूर्ण स्वतंत्र नहीं, हम गुलाम हैं, सभी प्रकार के जन्म एक क्षण में ही घटित होते हैं।

वह स्वतंत्रता बेमानी है जिसमें गलती करने और यहां तक कि पाप करने की स्वतंत्रता भी शामिल न हो। यदि सर्वशक्तिमान प्रभु ने अपने दीनतम प्राणियों को भी गलती करने की स्वतंत्रता दी है तो मैं यह नहीं समझ पाता कि कुछ लोग, वे चाहे जितने अनुभवी और योग्य हों, दूसरे मनुष्यों को उस बहुमूल्य अधिकार से वंचित करके किस प्रकार आनंदित हो सकते हैं।

जिस प्रकार प्रत्येक देश में खाने, पीने और श्वास लेने की सामर्थ्य होती है उसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र में अपने मामलों की देखभाल करने की सामर्थ्य होती है, चाहे वह इसे कितने ही भद्दे ढंग से करे।

ऊपर से थोपा गया नियंत्रण सदैव बुरा होता है... जब यह नियंत्रण हट जाएगा तो राष्ट्र आजादी से सांस ले सकेगा और उसे गलतियां करने का अधिकार होगा। गलती करते हुए और उन्हें सुधारते हुए प्रगति करने की प्राचीन विधि ही सही विधि है।

मेरी निश्चित धारणा है कि व्यक्ति केवल अपनी दुर्बलता के कारण ही अपनी स्वतंत्रता को खोता है।

मैं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को मूल्यवान समझता हूं, पर आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य बुनियादी तौर पर एक सामाजिक प्राणी है। अपने व्यक्तिवाद को सामाजिक प्रगति की अपेक्षाओं के साथ समायोजित करके ही वह इतनी उन्नति कर सका है। अप्रतिबंधित व्यक्तिवाद तो जंगल के पशु का नियम है। हमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक संयम के बीच एक मध्यमार्ग की खोज करनी होगी। समूचे समाज की भलाई के लिए स्वेच्छापूर्वक सामाजिक संयम को स्वीकार करने से व्यक्ति और समाज, जिसका वह सदस्य है, दोनों की संवृद्धि होती है।

अगर व्यक्तिगत स्वतंत्रता जाती रहे तो निश्चित समझिए कि सब कुछ चला गया, क्योंकि अगर व्यक्ति का ही महत्व न रहा तो समाज में बचा ही क्या? व्यक्तिगत स्वतंत्रता ही मनुष्य को समाज-सेवा के लिए स्वेच्छापूर्वक पूर्णतया समर्पित करा सकती है। अगर यह समर्पण उससे बलपूर्वक कराया जायेगा तो वह यंत्रचलित मनुष्य के समान काम करेगा और उसके

फलस्वरूप समाज बरबाद हो जायेगा। मनुष्य को व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित करके संभवत: किसी समाज की रचना नहीं की जा सकती। यह मनुष्य की प्रवृत्ति के सर्वथा प्रतिकूल है। जिस प्रकार मनुष्य सींग और पूंछ नहीं उगा सकता, उसी प्रकार यदि उसकी बुद्धि उससे छीन ली जाए तो वह फिर मनुष्य नहीं रह जाएगा।

स्वतंत्रता की मेरी संकल्पना कोई संकुचित संकल्पना नहीं है। उसमें मनुष्य की अपने सम्पूर्ण ऐश्वर्य के साथ पूर्ण स्वतंत्रता समाविष्ट है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रतिभा का उपयोग करने की पूरी-पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए और इसके साथ ही, उसके पड़ोसियों को भी अपनी-अपनी प्रतिभाओं का उपयोग करने की वैसी ही स्वतंत्रता मिलनी चाहिए, किन्तु किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा से होने वाले लाभों के मनमाने उपयोग का अधिकार नहीं होना चाहिए। व्यक्ति राष्ट्र अथवा, कहिए कि अपने चहुं और विद्यमान सामाजिक संरचना का अंग है।

इसलिए वह अपनी प्रतिभा का उपयोग केवल अपने हित में नहीं कर सकता, बल्कि उसे उसका उपयोग उस सामाजिक संरचना के हित में करना चाहिए जिसका वह अंग है और जिसकी मौन अनुमति से वह अपना जीवन जीता है।

कोई अत्याचारी आज तक अपने शिकार के सहयोग के बिना अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका है। यह अवश्य है कि उसने यह सहयोग प्राय: बलपूर्वक प्राप्त किया है। अधिकांश व्यक्ति प्रतिरोध के परिणामों को भुगतने

जब गुलाम यह संकल्प कर लेता है कि वह अब गुलामी नहीं करेगा तो उसी समय उसकी जंजीरें टूट जाती हैं। वह आजाद हो जाता है और दूसरों को भी आजादी का रास्ता दिखा देता है। आजादी और गुलामी मानसिक स्थितियां हैं, इसलिए पहली जरूरत इस बात की है कि हम स्वयं से कहें: 'मुझे अब गुलामी करना मंजूर नहीं है। मैं आदेशों का ज्यों-का-त्यों पालन नहीं करूंगा, बल्कि उन आदेशों को मानने से इंकार कर दूंगा जो मेरे अंत:करण को स्वीकाय नहीं है।'

के बजाए अत्याचारी की इच्छा के सामने घुटने टेक देते हैं। यही कारण है कि आतंक अत्याचारी का प्रमुख शस्त्र होता है। लेकिन इतिहास में ऐसा उदाहरण मौजूद हैं जब अत्याचारी आतंक का सहारा लेने के बावजूद अपने शिकार पर अपनी इच्छा लादने में कामयाब नहीं हुए हैं।

निरंकुश-से-निरंकुश सरकार भी अपने शासितों की सहमति के बगैर चल नहीं सकती, यह जरूर है कि निरंकुश सरकार यह सहमति प्राय: बल प्रयोग के द्वारा प्राप्त करती है। लेकिन ज्यों ही प्रजा के मन से निरंकुश शक्ति का भय जाता रहता है, निरंकुश की शक्ति तिरोहित हो जाती है।

जब गुलाम यह संकल्प कर लेता है कि वह अब गुलामी नहीं करेगा तो उसी समय उसकी जंजीरें टूट जाती हैं। वह आजाद हो जाता है और दूसरों को भी आजादी का रास्ता दिखा देता है। आजादी और गुलामी मानसिक स्थितियां हैं, इसलिए पहली जरूरत इस बात की है कि हम स्वयं से कहें: 'मुझे अब गुलामी करना मंजूर नहीं है। मैं आदेशों का ज्यों-का-त्यों पालन नहीं करूंगा, बल्कि उन आदेशों को मानने से इंकार कर दूंगा जो मेरे अंत:करण को स्वीकाय नहीं है।'

तुम्हारा तथाकथित स्वामी तुम्हारे ऊपर कोड़े बरसा सकता है और तुमसे अपनी चाकरी कराने के लिए जोर-जबर्दस्ती करने की कोशिश कर सकता है। तुम्हें कहना होगा: 'नहीं, मैं पैसे की खातिर या तुम्हारी धमकी में आकर तुम्हारी चाकरी नहीं करूंगा।' इसके लिए तुम्हें पीड़ा भोगनी पड़ सकती है। पर पीड़ा भोगने की तुम्हारी तत्परता के फलस्वरूप आजादी की मशाल जल उठेगी जो फिर कभी नहीं बुझायी जा सकेगी।

हम एक हों अथवा अनेक, हमें अपने आत्म सम्मान या अपनी परम प्रिय मान्यताओं की कीमत देकर बदले में स्वतंत्रता लेने से इंकार कर देना चाहिए।

यदि हम स्वतंत्र स्त्री-पुरुष के रूप में नहीं जी सकते तो इसकी अपेक्षा हमें मौत को गले लगा लेने में अधिक संतोष मानना चाहिए।

मनुष्य को अपनी पराधीनता के लिए स्वयं को ही दोषी मानना चाहिए। वह जिस क्षण संकल्प कर ले, उसी क्षण स्वाधीन हो सकता है।

स्वतंत्रता किसी भी कीमत पर महंगी नहीं होती। स्वतंत्रता जीवन का श्वास है। आदमी जीने के लिए क्या नहीं दे देगा ? ❑

भवन्स नवनीत अगस्त, 2019 से साभार

भारतीय समाज और शिक्षा

❑



❑
विमल कुमार

लेखक शिक्षा व्यवस्था के समक्ष गंभीर चुनौतियों पर विमर्श करते हुए शिक्षक की भूमिका पर जोर दे रहे हैं ताकि समानता का समाज बनाया जा सके।
❑ सं.

भारतीय समाज में विविधताएँ हैं इसलिए भारतीय समाज और संस्कृति को समझने के लिए एक अंतर्दृष्टि की आवश्यकता पड़ती है। यह स्पष्ट है कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली धर्म पर आधारित थी, जबकि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश ढांचे पर आधारित है। उपनिवेशवाद के दौर में भारत में औपचारिक शिक्षा प्रणाली की शुरुआत हुई। भारत में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा संस्थानों की स्थापना इसी ब्रिटिश प्रणाली के अनुरूप हुई।

स्वतंत्र भारत में सभी स्तरों पर शिक्षा में बहुआयामी विकास हुआ लेकिन गुणात्मक विकास की बजाय परिमाणात्मक विकास ज्यादा हुआ। शिक्षा का स्वरूप आमतौर पर उपनिवेशवादी ही रहा। यदि वर्तमान में हम पुनर्विलोकन करें तो इसमें क्रमिक रूप से बदलाव देखने को मिलता है। स्वतंत्रता के पश्चात 1948-49 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया जिसने स्वतंत्र भारत की शिक्षा प्रणाली को नवगठित संप्रभु राष्ट्र की जरूरतों और आकांक्षाओं के अनुकूल बनाने पर जोर दिया। फिर कोठारी आयोग के माध्यम से भारतीय शिक्षा प्रणाली की स्थापना हुई थी। इस समिति के परिणामों ने 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मार्ग प्रशस्त किया, जिसने भारतीय शिक्षा प्रणाली के भविष्य के विकास की नींव रखी। 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने सांस्कृतिक और आर्थिक विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय एकीकरण में सुधार के लिए दृढ़तापूर्वक सुधार और शैक्षिक अवसरों के बराबरी का आह्वान किया। इसी प्रकार 1985 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मिशन शिक्षा में असमानताओं को दूर करना और समाज के सभी सदस्यों, विशेषकर हाशिए पर रहने वालों को समान शैक्षिक अवसर देना था। देश भर में प्राथमिक विद्यालयों को बेहतर बनाने के लिए ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड शुरू किया गया। इस शिक्षा नीति के तहत ही इग्नू इंदिरा गांधी खुला विश्वविद्यालय की स्थापना भी हुई। वर्ष 1992 में शिक्षा नीति, 1986 में संशोधन किया गया जिसके माध्यम से हमारी विस्तृत युवा आबादी की समकालीन जरूरतों और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक बदलाव किए गए।

भारत के संविधान में शिक्षा व्यवस्था से संबंधित विशिष्ट प्रावधान किए गए। संवैधानिक प्रावधानों को मूर्त रूप देने के लिए सरकार ने निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 को पारित किया। अनिवार्य शिक्षा से तात्पर्य

है कि यह राज्य का दायित्व है कि वह 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को मुफ्त प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करे और उनकी अनिवार्य प्रवेश, उपस्थिति एवं प्रारंभिक शिक्षा को पूरा करना सुनिश्चित करे। उपरोक्त प्रावधानों की वजह से ही सर्व शिक्षा अभियान, 2001 जैसे कार्यक्रम का तेजी से विस्तार हुआ और सकारात्मक परिणाम सामने आए।

टी.एस.आर. सुब्रह्मण्यम और कस्तूरीरंगन समिति की रिपोर्ट ने भारत के लिए एक नई शिक्षा नीति तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। सुब्रह्मण्यम समिति ने मई 2016 में सरकार को एक रिपोर्ट सौंपी। इसने सुझाव दिया कि सरकार को भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए कई सुधार और नवीन पहल करने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 द्वारा भारत की शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन किया गया। इसका उद्देश्य 21 वीं सदी के अनुकूल भारतीय शिक्षा व्यवस्था की संरचना को विकसित करना है। इसका प्रमुख उद्देश्य बच्चों को सिर्फ साक्षर नहीं बनाना है बल्कि उनमें सामाजिक और भावनात्मक कौशल का समुचित विकास करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 2030 तक स्कूली शिक्षा के सर्वव्यापीकरण का लक्ष्य रखा गया है। इसमें पाठ्यक्रम की संरचना के साथ-साथ अध्यापन के तौर तरीकों और आकलन व्यवस्था में भी बदलाव को इंगित किया गया है। यह एक वृहद दस्तावेज है जिस पर विमर्श जारी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर यह आरोप भी है कि संसाधनहीनता की स्थिति में हम कैसे अपने शैक्षणिक ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन ला सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रस्तावित सुधार केवल संघीय और राज्य सरकारों के बीच साझेदारी से ही लागू किए जा सकते हैं क्योंकि शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है इसलिए भविष्य में, सहकारी संघवाद आवश्यक होगा।

भारतीय के समक्ष चुनौतियाँ

वैश्वीकरण के इस दौर में हमारा समाज एक अज्ञात भविष्य की ओर अग्रसर दिखाई देता है। बढ़ती जनसंख्या और सीमित संसाधनों के साथ हमारे देश को नई समस्याओं का सामना करना है। भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें ऐसे ज्ञान और दक्षता की आवश्यकता होगी जो हमारी समस्या समाधान में योगदान कर सके।

वर्तमान में भारत में 1000 से ज्यादा विश्वविद्यालय हैं जिनमें 54 केंद्रीय विश्वविद्यालय, 416 राज्य विश्वविद्यालय, 125 डीम्ड यूनिवर्सिटी, 361 निजी विश्वविद्यालय, 159 राष्ट्रीय महत्व के शोध संस्थान जिनमें अनेक आईआईटी एवं आइआइएम शामिल हैं। उपरोक्त संस्थानों से यदि कॉलेजों की संख्या को जोड़ दिया जाए तो यह संख्या लाखों में पहुंचती है। लेकिन इतने शैक्षणिक और शोध संस्थानों तथा मानव संसाधन की प्रचुरता के बावजूद भारत में अभी ज्ञान संस्कृति' का विकास और विस्तार तीव्र गति से नहीं हो पाया है। हमारी बौद्धिक संपदा का व्यवहारिक उपयोग भी नाकाफी है। आज ब्रेन ड्रेन' (प्रतिभा पलायन) भारत की एक बड़ी समस्या है। 2011 की जनगणना के अनुसार 26% से अधिक भारतीय अभी भी निरक्षर हैं जो कि बेहद डरावना आंकड़ा हैं क्योंकि एक राष्ट्र के रूप में हमारी महात्त्वकांक्षाएँ इससे ज्यादा की मांग करती है। कोरोना संकट ने भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था के समक्ष कई चुनौतियाँ उत्पन्न की। इस संकट से यह जाना जा सकता है कि हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को कितना तकनीकी कुशल बनाने की जरूरत है। आज शिक्षण संस्थाओं की स्थापना तथा प्रबंधन एक लाभकारी उद्योग बन गए हैं; इससे शिक्षा का बाजारीकरण हुआ है।

किसी भी राष्ट्र के लिए 75 वर्ष न तो बहुत कम होते हैं और न ही बहुत ज्यादा। पिछले 75 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में हमने ऐतिहासिक उपलब्धियां प्राप्त की हैं तो कई ऐसे प्रश्न हैं जो हमारी शिक्षा व्यवस्था के समक्ष गंभीर चुनौती बनते हैं। वैश्वीकरण और बाजारीकरण के दौर में बहुतों को हमारी शिक्षा व्यवस्था को भारतीय समाज के अनुकूल बनाने की जरूरत महसूस होती है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के संदर्भ में एक शिक्षक की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण होती जा रही है क्योंकि उसे न केवल बच्चों का बौद्धिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक तथा शारीरिक विकास करना है बल्कि सामाजिक, चारित्रिक, एवं सांवेगिक विकास भी करना है।

शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में आज महात्मा गांधी और डॉ. आंबेडकर के विचार भी बेहद प्रासंगिक हैं। जहां गांधी के सर्वोदयी समाज' में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान था वहीं डॉ आंबेडकर शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बराबरी का महत्वपूर्ण हथियार मानते थे।❑



❑

ओम प्रकाश टाक

ओम प्रकाश टाक जोधपुर में रहते हैं। वर्तमान में समिति की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। पूर्व में समिति के उपाध्यक्ष रहे हैं। यह लेख जीवन को आध्यात्म की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त करता है। गांधीवादी साहित्य पर आपकी पकड़ है। ❑सं.

तृष्णा नहीं तृप्ति जीवन है

❑

ये **'चाह गई चिन्ता मिटी मनुवा बेपरवाह जिनको कछु न चाहिए वो ही शहंशाह'**

कबीर की कविता है जो मैंने स्कूल के दिनों में पढ़ी थी, जो बताती है कि चाह और चिन्ता के मिटने से ही मनुष्य के जीवन में सच्चा आनंद आता है और जिस मनुष्य में कोई इच्छा शेष ही नहीं रहे वह व्यक्ति दुनिया का बादशाह बन जाता है। यह एक आदर्श जीवन दर्शन है जिसे आधार बनाकर हमें अपने निजी जीवन में अमर्यादित भोग और अंतहीन इच्छाओं पर अंकुश लगाने की कोशिश करनी चाहिए और उस मन का स्वामी बनने का प्रयत्न करना चाहिए जो तृप्ति के अमृत से भरा हो। याद रहे अमाप इच्छाएं समस्त दु:खों की जननी है और एक तृप्त मन सभी सुखों का आधार है। अमाप इच्छाएं क्लेश देती हैं और तृप्त मन आनंद देता है। संतजन कहते हैं कि इच्छा का समुद्र सदा अतृप्त रहता है उसकी मांगें ज्यों-ज्यों पूरी की जाती है त्यों-त्यों वह और गर्जन करता है। इसके विपरीत एक तृप्त मन सदा शांत रहता है और वह चन्द्रमा एवं चन्दन से भी अधिक शीतल होता है। मानव जीवन के लिए तृप्त मन ही कल्याणप्रद है।

यह बात रेखांकित करने योग्य है कि इच्छाओं का अपना स्वभाव होता है तो तृप्त मन की भी अपनी प्रकृति होती है। इच्छा और मनुष्य के बीच नाभिनाल का सम्बन्ध है। जन्म के बाद जब बच्चा पहली सांस लेता है तो उसके पीछे जीने की इच्छा ही प्रबल होती है, कालान्तर में वह रोटी, कपड़ा और मकान की इच्छा करता है वह भी स्वाभाविक है। 'सांई इतनो दीजिए जा में कुटुंब समाय, मैं भी भूखा न रहूं, साधू न भूखा जाए' यह प्रार्थनामय इच्छा भी पवित्र और स्वीकार्य है। देखा जाए तो ये सब सात्विक इच्छाएं हैं जो जीवन निर्वाह के लिए जरूरी है लेकिन इच्छाओं का एक और प्रकार भी है जो लोभ लालच और माया मोह से प्रेरित होता है और उसे तामसिक कोटि में रखा जा सकता है। ये इच्छाएं अपने साथ दु:ख और भय लेकर आती है, ये मनुष्य का सुख चैन छीन लेती है और इसे स्वार्थ में अंधा बना देती है। तामसिक इच्छाएं मन का विकार बढ़ाती हैं और उसेअशांत, हिंसक और प्रतिस्पर्धी बनाती हैं। इन इच्छाओं का कोई ओर-छोर नहीं होता, ये अमाप और अंतहीन होती हैं। आदमी के चेहरे पर झुर्रियां पड़ जाए, सिर के बाल पककर सफेद हो जाए, सारे अंग शिथिल हो जाए तो भी ये

इच्छाएं सदा तरुण रहती हैं। इन इच्छाओं का प्याला पीते-पीते आदमी अविचारी और पागल हो जाता है और अपराध व अधर्म करने के लिए भी तैयार हो जाताा है। तामसिक इच्छाएं जीवन को कलंकित करती हैं और शुचिता को नष्ट करती है इसलिए त्याज्य है।

सात्विक इच्छाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि भले ही इनकी परिपूर्ति के लिए बहुविध प्रयत्न करने पड़े लेकिन इनसे मन को प्रगाढ़ तृप्ति मिलती है और इस तृप्ति की अभिव्यक्ति जीवन में शांति, प्रीति और मुदिता के रूप में दिखाई देती है। एक तृप्त मन जीवन की महामूल्यवान निधि है और यही आध्यात्मिक जागरुकता की आधारशिला भी है। तृप्त मन एक ऐसा मन है जिसे कोई आकर्षित नहीं कर पाता है लेकिन वह सबको आकर्षित कर लेता है - यहाँ तक कि एक तृप्त मन का स्वामी ईश्वर को भी अपने प्रति आकर्षित करने की सामर्थ्य रखता है। शिरडी के फकीर संत साईं बाबा ने संसार को श्रद्धा और सबूरी का उपदेश दिया। उन्होंने जिस सबूरी की बात कही उसका संबंध मन की तृप्ति से ही था। बाबा के अनुसार सबूरी अर्थात् तृप्ति संसार का सबसे बड़ा धन और सबसे बड़ा सुख है। जो अपने पास है वह कम नहीं है, ईश्वर चाहेगा तो और मिलेगा इस भाव का नाम ही सबूरी और तृप्ति है। बाबा कहते हैं कि अपने भाग्य को दूसरों से तुलना किए बिना प्रसन्न होकर स्वीकार करने वाले व्यक्ति का मन हमेशा तृप्ति और सबूरी से भरा रहता है। अत: ईश्वर ने जो कुछ दिया है, उसी में समाधान वृत्ति रखनी चाहिए और यह भाव विकसित करना चाहिए कि ईश्वर सब चराचर में व्याप्त है और जो भी स्थिति उसकी दया और कृपा से प्राप्त है वह अवश्य ही अपने लिए मंगलकारी है। एक तृप्त मन का व्यक्ति ईश्वर के सम्मुख फरमाइशों की फेहरिस्त नहीं रखता बल्कि वह मात्र इतनी प्रार्थना करता है कि हे! ईश्वर मैं जानता हूँ कि आपको मेरी हर इच्छा और जरूरत का पहले से पता है इसलिए अपनी इच्छानुसार आप मेरा निर्वाह करें....। यह प्रार्थना ही सच्ची, मार्मिक और पावन है।

आज के मानव समाज की प्रमुख पहचान है - अतिशय भौतिकता और आंतरिक शून्यता। आज हर व्यक्ति अधिक सत्ता, अधिक धन और अधिकाधिक सुख-सुविधा प्राप्त करने के लिए अपना पूरा जीवन खपा देता है और मन में आधी-अधूरी इच्छाएं लिए ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। ऐसे में जीवन का कुल हासिल शून्य ही रहता है। कुँवर नारायण की कविता है - 'धरती पर पांव रखते ही हर कोई सोचता है कि जीत लूं पूरी धरती को मानो धरती रहने के लिए नहीं जीतने के लिए ही बनी है। सिकन्दर का निर्णायक युद्ध पोरस से नहीं एक बीमार सिकन्दर से हुआ जिससे लड़ते हुए वह मारा गया और नापने पर उसकी सारी जीतों का क्षेत्रफल दो गज से अधिक नहीं निकला।' यह सच्चाई आंखें खोल देने के लिए पर्याप्त है।

अत: जीवन में विनम्र अभिलाषाएं होनी चाहिए बर्बर महत्वाकांक्षाएं नहीं और इसके लिये जरूरी है प्रारम्भ से ही आत्मकल्याण के लिए सजग रहना है, ज्ञान-ध्यान में रुचि लेना और संत सानिध्य का अवसर पाने का प्रयत्न करना। हमें याद रखना चाहिए कि जीवन तृष्णाओं से नहीं तृप्ति से सुन्दर बनता है। ❑

रामद्वारा गली, बागर चौक
जोधपुर (राजस्थान)
मो.-9829027010



जब तक सामाजिक ढांचे में बुनियादी बदलाव नहीं होगा, तब तक प्रगति से हम कुछ ज्यादा हासिल नहीं कर सकेंगे। जाति की बुनियाद पर आप कोई निर्माण नहीं कर सकेंगे। आप न तो राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे, न नैतिकता का ही निर्माण कर पायेंगे। जाति की बुनियाद पर खड़े हर निर्माण में दरारें ही होंगी और वह कभी पूर्ण नहीं होगा।

❑ **बाबा साहेब डॉ. भीमराव आम्बेडकर**

कला सृजन की अभिव्यक्ति है

❑



❑

डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला

लेखिका
डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला वनस्थली विद्यापीठ में चित्रकला विभाग की एसोसियेट प्रोफेसर एवं समिति की साधारण सभा की सदस्य हैं। समिति से काफी समय से जुड़ी हैं। प्रस्तुत लेख में वे अपनी रिजोर कला यात्रा के दौरान हुए अनुभव का साझा कर रही हैं। ❑ सं.

रिजोर उत्तर प्रदेश का एटा जिला है, रिजोर का महल 13वीं 14वीं शताब्दी के आसपास बना था जो अब खंडहर में बदल गया है उसके मात्र कुछ अवशेष ही बच रहे हैं।

कला की कोई क्षिति रेखा नही होती हैं रिजोर में मैंने जो गढ़ी देखी उसे वहां के राजा कुशल सिंहजी ने वर्ष 1880-1890 के आसपास 'नया महल' नाम से बनवाया था जिसे आज गढ़ी के नाम से जानतें हैं । इसमें बने चित्रों से राजा कुशल सिंह जी की सौन्दर्य दृष्टी का अद्भुत आभास होता है। मैंने जब गढ़ी की दीवारों पर बने चित्र देखे तो मेरी जिज्ञासा कुलांचे भरने लगी और मैं दीवारों पर बने चित्रों को बहुत ही ध्यान से देखती रही जो फ्रेस्को की इटैलियन पद्धति के बहुत नज़दीक हैं जो कलात्मकता की गहन अभिव्यक्ति भित्ति चित्र कहे जा सकतें हैं। गढ़ी तो बहुत विशाल बनी है किंतु उसकी हालत बहुत नाजुक है फिर भी उसमें चौहानों के विश्वास पात्र परिवार अब भी निवास कर रहें हैं जिस कारण यहाँ के कुछ चित्र शेष बचे हुये हैं । हालांकि वे अंतिम प्रणति में ही हैं किन्तु अभी वो चित्र देखने में आ रहें हैं। उस गढ़ी का विशाल बरामदा या मेरी दृष्टि से संवाद या आराम से बात चीत करने का स्थल ही रहा होगा जिसे सौंदर्य से सजाया जा रहा था किन्तु वहां कुछ चित्र अधूरे दिखे जिनको पूरा नही किया जा सका, कारण पूछने पर पता चला कि अचानक कुछ हमलों के होने से अंदर हॉल में चित्रण कार्य पूरा नहीं हो सका वो अधूरा ही रह गया। रिजोर के चौहानों की 25वीं पीढ़ी का एक परिवार गढ़ी के पास स्वनिर्मित गृह में अभी रह रहा है । उनका घर मुझे छोटा मोटा संग्रहालय ही नजर आया । गृहस्वामी अजय प्रताप सिंह से जब कला दृष्टि की बात हुई तो बहुत सी बातें स्पष्ट हुई कि उनके वंशजों की कला दृष्टि बहुत ही विकसित थी तभी तो किले के पास सौन्दर्य से पूर्ण बहुत पुराना मंदिर था। जिसे संभवतः किले के निर्माण के साथ ही बनाया गया होगा जिसमें हिन्दू, जैन, और बौध धर्म की मूर्तियों को स्थापित किया गया होगा । रिजोर का मंदिर वक्त के साथ चिरनिद्रा में सो गया किन्तु उसका सौन्दर्य जगमगाता रहा अर्थात् मूर्तियाँ वक्त की मार से घायल तो हुई लेकिन उनका सौन्दर्य बरक़रार रहा । मूर्तियां

चुराई गई और देश-विदेश पंहुचा दी गयी। उनका पता दशकों दशकों बाद मिला तो उन को अपने देश अपने घर वापिस लाया गया। इन मूर्तियों पर गुप्तकाल का प्रभाव दिखाई देता है इसमें से कुछ मूर्तियों का संग्रह अजय प्रताप सिंह चौहान के पास देखने को मिला । इन मूर्तियों में सबसे प्रमुख मूर्ति विष्णु की है जो कुल देव के रूप में पहले भी पूजी जाती थी और आज भी पूजी जाती है इसकी कलात्मक विशेषता ये है कि उसे बहुत ही कोमलता के साथ पत्थर पर तराशा गया है । इसमें बारह अवतारों को भी अंकित किया गया है। आकृतियों की कोमलता में अजंता एलोरा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। वैसी ही लयात्मकता, वैसे ही भाव प्रवीणता। जिन्हें देखने मात्र से स्वर्णिम काल की याद आ जाती है। इसी के साथ अन्य मूर्तियाँ भी हैं जो खंडित तो हैं पर सौन्दर्य से लबालब हैं। कुछ मूर्तियों पर लिखा हुआ भी है जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। इतना ही नही कई हस्तलिखित पांडुलिपियां भी उनके पास मुझे देखने को मिली । जब अजय प्रताप सिंह ने मुझे हस्तलिखित पोथियाँ और मूर्तियां दिखायीं तब जो सहजता उनके शब्दों में और चेहरे पर थी, वह सुकून देने वाली थी। । यही कलात्मक सुकून उस समय के राजाओं का रहा होगा जिन्होंने गढ़ी के चित्रों को शिद्दत से बनवाया होगा । गढ़ी में जो चित्र दीवारों पर मिले हैं उनके विषय आसपास से ही लिए गए हैं। इन चित्रों के जो भी विषय हैं वो सभी बहुत ही सहज और आसानी से समझ कर आंनद देनेवाले हैं । अधिकतर चित्र नृत्य करती अप्सराओं के रूप में हैं जिसमें



चमकदार रंगों का प्रयोग किया गया है। अन्य चित्रों में मोरों के साथ सांप को बहुत ही लयात्मक और प्रभावशाली ढंग से अंकित किया गया है जिनको चमकदार रंगों से सजाया गया है । कुछ चित्र हाईरिलीफ में भी बनाये गए हैं। अलंकारिक डिजाइन को बहुत ही चमकदार रंगों से सजाया गया है , इतना ही नहीं जो गढ़ी के लकड़ी के दरवाजें हैं, उन पर भी कमाल की कारीगरी की गई है।

रिजोर का किला और महल काल के गर्त में समा गये किन्तु नया महल जिसे अब गढ़ी के नाम से जानतें हैं काफी क्षीण अवस्था में होने पर भी सौन्दर्य से भरपूर है उसमे बने चित्र लगभग एक शताब्दी पुराने होने पर भी रंगों में चमक आज भी बनी हुई । इस गढ़ी को बनवाने वाले राजा कुशल सिंह की शूरवीरता और इनकी वंशावली का वट वृक्ष कई शताब्दी पुराना है। राजा कुशल सिंह चौहान की कला दृष्टि के साक्षी ये चित्र और मूर्तियाँ निश्चित रूप से विरासत से ही प्राप्त हुई होंगी। कला हमारी आत्मा से जुड़ी हुई है । जीने का आधार ही हमारी कलाएं ही हैं। तभी तो हमारे शूरवीरों की गहन कला कि पारखी नज़र का दीदार महलों या गढ़ी में कहीं न कहीं हो ही जाता है जबकि इसी बीच उनकी युद्ध यात्राएं भी गतिशील हुआ करतीं थीं , फिरभी संघर्षमयी जीवन मे इन्ही रचनाओं से सुकून का सहजता का स्थायित्व था । मेरी दृष्टि में वही श्रेष्ठ इतिहास है जहाँ पर कला ने पूर्णरूप से स्थायित्व पाया है ।

रिजोर की मेरी ये कला यात्रा अनोखी रही है तो गलत नहीं होगा। रिजोर की कला के ये चित्र अपने चाहने वालों को निश्चित अवसर पर अपने पास बुला ही लेते हैं । कलाएं अमृत के समान हैं जो एक बूंद से ही कला प्रेमियों को तृप्त कर आनंद भाव से भर देतीं हैं । ❑

6, रवीन्द्र निवास,
वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक



सहज कर्मयोगी श्रीलाल मोहता की याद

❑

सहज कर्मयोगी श्रीलाल मोहता की याद साल भर चली 'कला सृजनमाला' का समापन कीर्तिशेष श्रीलाल मोहता की पहली बरसी पर पिछले साल संकल्प लिया गया था कि उनके बहुमुखी व्यक्तित्व और कृतित्व से फिर-फिर प्रेरणा पाने के लिए वर्ष भर साहित्य, कला और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाएं। इसी के तहत बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति तथा उरमूल सीमांत, बज्जू ने मिलकर साल भर 'कला सृजनमाला' के सार्थक आयोजन किये गए जिनकी पूर्णाहुति शिक्षामंत्री बी. डी. कल्ला के मुख्य आतिथ्य में गत 16 मई को बीकानेर में हुई। इस गरिमामय आयोजन की अध्यक्षता राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष शिवराज छंगाणी ने की जिसमें चिंतक कवि नंदकिशोर आचार्य भी उपस्थित थे।

कल्ला ने डॉ. मोहता को शिद्दत से याद करते हुए उन्हें विराट व्यक्तित्व का धनी बताते हुए उनके संगीत, कला और साहित्य के क्षेत्र में अवदान को रेखांकित किया।

पिछले पूरे एक साल चली 'कला सृजनमाला'के तहत कुल सात आयोजन हुए। इन आयोजनों का शुभारंभ डॉ. श्रीलाल मोहता द्वारा संपादित कृति 'संगीतः संस्कृति की प्रकृति' पर साहित्यकार डॉ. उमाकांत गुप्त के समीक्षात्मक संवाद के साथ हुआ जबकि दूसरे आयोजन में युवा रचनाकार डॉ. अनीता गोयल ने लेखिका गीतांजलि के बुकर सम्मान प्राप्त उपन्यास 'रेत समाधि' पर पत्रवाचन किया।

तीसरे आयोजन में साहित्यकार प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने 'साहित्य और सहिष्णुता' पर व्याख्यान दिया। चौथे आयोजन में साहित्यकार मधू आचार्य 'आशावादी' ने डॉ. मोहता के कृतित्व और व्यक्तित्व को विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से याद किया।

पांचवां आयोजन लोक भजन, हरजस तथा वाणियों के संग्रह व संरक्षण करने वाली संस्था 'परंपरा' के कामों पर आधारित था जिसमें प्रख्यात गायक प. केशव शर्मा ने प्रस्तुति दी। इसी प्रकार छठे आयोजन में रंगकर्मी कैलाश भारद्वाज ने बीकने की रंग-यात्रा के अनुभव साझा किये।

'कला सृजनमाला' के तहत सातवें आयोजन में साहित्य चिंतक राजाराम भादू ने युवा रचनाकार डॉ. कौशल्या नाई की दो कृतियों – 'रमेशचंद्र शाह का डायरी साहित्य' तथा 'राजस्थान का डायरी साहित्य' – का लोकार्पण करते हुए डायरी साहित्य पर संवाद किया। ❑

ओमप्रकाश सुथार,
बी.प्रौ.शि.स., बीकानेर





पर्यावरण

जामुन

❑

देवेन्द्र भारद्वाज

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के औषध वन में लगे सौ से अधिक पेड़–पौधों की जानकारी देती श्रंखला के अंतर्गत इस बार देवेन्द्र भारद्वाज जामुन के बारे में बता रहे हैं। ❑सं.

बरसात का मौसम आते ही हमारे प्रागंण मे स्थित जामुन वृक्ष फलों से लद जाते हैं । प्रातः वृक्षों के नीचे फलों की चादर बिछी मिलती है। लगता है मानों प्रकृति छप्पर फाड़ के अपना स्नेह बरसा रही है। आन्नद की बात यह है कि रंग–बिरगें पक्षी भी हमारे केम्पस की सुन्दरता में चार चांद लगाते है। आपने भी तो खट्ठे–मीठे जामुन खाए ही होंगे, वर्षा ऋतु के आते ही जगह–जगह ठेलों और फुटपाथ पर जामुनी ढेरियां नजर आने लगती हैं। ये जामुनी ढेरियां राहगीर का अनायास ही ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। इनका रंग इतना पक्का है कि इनके नाम से ही जामुनी रंग का चलन प्रारम्भ हो गया।

जामुन एक महत्वपूर्ण ऊष्णकटिबंधीय फल है। यह दक्षिण–पूर्व एशिया व आसपास के क्षेत्रों जैसे भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया, फिलीपींस, इंडोनेशिया में पाया जाता है। भारत में उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात, असम आदि राज्यों में भी जामुन की अच्छी पैदावार होती है। जामुन एक सदाबहार वृक्ष है, जिसका पूर्ण विकास 25 से 35 फीट ऊँचाई तक हो जाता है। इसके एक बार लग जाने के पश्चात् 50 से 60 वर्षो तक फल प्रदान करता है । जामुन को जामभूल, जाम्बू और जाम्बुला, जमाली, राजमन, ब्लैकबेरी, और काला जामुन के नामों से भी जानते है । किन्तु जामुन ही सर्वाधिक प्रचलित नाम है। जामुन के सर्वाधिक वृक्ष नदी–नालों के किनारे मिलते हैं। जामुन समशीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय जलवायु वाला होता है । ठंडे प्रदेशो के अलावा जामुन के पौधों को कही भी उगाया जा सकता है । इसके विकसित वृक्ष पर गर्मी, सर्दी और वर्षा का कोई खास असर नहीं पड़ता है। जामुन की मुख्य प्रजाति के अतिरिक्त पाई जाने वाली अन्य प्रजातियां कम गुण वाली होती है। जामुन की पांच प्रजातियां पायी जाती हैं।

औषधीय रूप में जामुन के बीज, पत्ते तथा छाल का ही प्रयोग किया जाता है। मधुमेह की चिकित्सा में विशेषतया जामुन के बीजों का प्रयोग किया जाता है। काठ–जम्बु के तने की छाल से शारीरिक शक्ति बढ़ने के साथ–साथ सेक्सुअल स्टैमिना में भी बढ़ोतरी होती है। भूमि–जम्बु पेट के कीड़ों को खत्म करता है और गठिया में फायदेमंद भी होता है। इसके फल सुगन्धित तथा मीठे होते हैं। सफेद जम्बु के तने की छाल रक्त संबंधी बीमारी, दस्त और कीड़ों को खत्म करने में मदद पहुंचाती है। क्षुद्र–जम्बु, कफ–पित्त दोष को सुधारने, ह्दय रोग और शारीरिक शक्ति को बढ़ाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इसके फल के सेवन से शरीर की जलन शांत होती है।



इसका प्रत्येक भाग काम में लिया जाता है, किन्तु इसके फलो के उपयोग से ही हम भली– भांति परिचित हैं। खाने के अलावा जामुन का फल अनेक प्रकार की चीजों जेली, शरबत, जैम और शराब तथा अन्य चीजों को बनाने में प्रयोग में लिया जाता है।

जामुन की गुठली में जंबोलीन नामक ग्लूकोसाइट पाया जाता है। यह स्टार्च को शर्करा में बदलने से रोकता है, जो मधुमेह के नियंत्रण में काफी मददगार साबित होता है। अगर किसी को मधुमेह की परेशानी है तो उन्हें यह फल बहुत फायदा करता है। मधुमेह में जामुन की गुठली भी फायदेमंद है।

जामुन का रस, शहद, आंवले या गुलाब के रस के साथ मिलाकर पीने से रक्त की कमी और दुर्बलता दूर होती है। विषैले जंतुओं के काटने पर जामुन की पत्तियों का रस काफी कारगर साबित होता है। जामुन की पत्तियों में नमी सोखने की अद्भुत क्षमता होती है। कटे स्थान पर जामुन की पत्तियों को बांधने पर घाव जल्दी ठीक होने लगता है।

जामुन की छाल के पाउडर में कुछ अन्य अवयव मिलाकर चाय का निर्माण किया गया है। तैयार चाय का इस्तेमाल मूत्रोत्सर्जन पथ के संक्रमण एवं अन्य विकारों के उपचार में काफी लाभदायक है। ❑

136, नेमी नगर, विस्तार वैशाली नगर थाने के पास, जयपुर

भरत के नाट्यशास्त्र की ऐतिहासिकता

प्रोफेसर रवि चतुर्वेदी ने 7 जुलाई को राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में अपने एक घंटे के व्याख्यान दिया।

इंडियन सोसायटी फॉर थियेटर रिसर्च तथा समिति की सहभागिता में आयोजित 'रणवीर सिंह स्मृति व्याख्यानमाला' का पहला व्याख्यान देते हुए प्रो. चतुर्वेदी ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि विद्वानों ने भरत के नाट्यशास्त्र को पवित्र तथा धर्मग्रंथ मान कर किनारे कर दिया



जबकि वैदिक काल में रचित यह शास्त्र रंगमंच की सभी विधाओं की विस्तृत मार्गदर्शिका है, विज्ञान है। उनका कहना था कि नाट्यशास्त्र इतना विस्तृत है कि उच्च शिक्षा में उसका पांच वर्ष का डिग्री पाठ्यक्रम तैयार किया जा सकता है।

अपने विदेशों के अकादमिक अनुभवों का साझा करते हुए उन्होंने बताया कि विश्व को बड़े बड़े विद्वान इस विशाल शास्त्र को गहराई से पूरा पढ़े बिना ही इसे धर्मग्रंथ या काव्य मान लेते हैं।

उनका कहना था कि यह एक प्रामाणिक शास्त्र है जिसे किसी एक विद्वान ने नहीं लिखा भले ही लोक में वह भरतमुनि का माना गया है। भरत, लेखकों की वैसी ही श्रृंखला है जैसे मनु की।

यह व्याख्यानमाला थियेटर मर्मज्ञ स्वर्गीय रणवीर सिंह की स्मृति में उनकी जन्मतिथि पर रखी गई। यह भी तय किया गया कि प्रतिवर्ष इस दिन एक व्याख्यान रखा जाय।❑

युवा साथियों के साथ संवाद

उदयपुर में पढ़े बड़े हुए विख्यात फिल्मकार गोविंद निहालाणी के काम को समग्र रूप से समझने और उसका नये सिरे से मूल्यांकन करने का एक सिलसिला राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति से जुड़े युवा साथियों ने शुरू किया है। अब तक निहालाणी की तीन फिल्मों –'रुकमाबाई की हवेली', 'पार्टी', और 'दृष्टि' का समिति सभागार में प्रदर्शन किया गया और प्रत्येक फिल्म पर युवा साथियों ने गंभीरता से लंबा विमर्श किया।

इसके साथ ही वरिष्ठ साथियों के आग्रह पर सर्वकालिक महान फिल्मों में गिनी जाने वाली स्टेनली कुब्रिक की फिल्म 'स्पार्टाकस' का भी प्रदर्शन किया गया तथा उसे आज के सिनेमा के संदर्भ में नए सिरे से समझागया। ❑

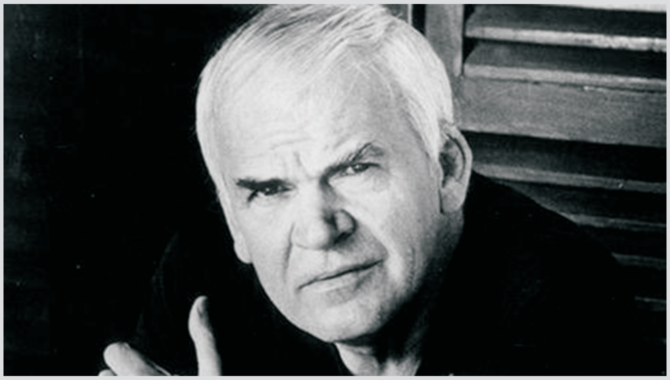
मिलान कुंदेरा नहीं रहे

बीसवीं सदी के एक प्रमुख कथाकार मिलान कुंदेरा का 94 वर्ष की उम्र मे पिछले दिनों निधन हो गया।

इस चर्चित लेखक का जन्म एक अप्रैल 1929 को चेकोस्लोवाकिया के ब्रनो में हुआ। उनके विचारों के कारण उन्हें देशनिकाला दे दिया गया जिसके बाद 1975 में वे फ्रांस चले गए तथा 1981 में वहां की नागरिकता ले ली। कुंदेरा ने चेक तथा फ्रांसीसी दोनों भाषाओं में लिखा है। चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट सरकार ने उनकी पुस्तकों पर प्रतिबंध लगा दिया था जो 1989 की बेलवित क्रांती के पश्चात कम्युनिस्ट सरकार के पतन होने तक जारी रहा।

विचारधाराओं के टकराव में कुंदेरा वामपंथियों के ख़िलाफ़ माने गए। हालांकि इसे उन्होंने खुद कभी स्वीकार नहीं किया।

कुंदेरा की सर्वाधिक चर्चित कृति ‘द अनबियरेबल लाइटनेस ऑफ़ बीइंग’ (वजूद का असहनीय हल्कापन) उनके समूचे लेखन का प्रतिनिधित्व करती है। भारत के



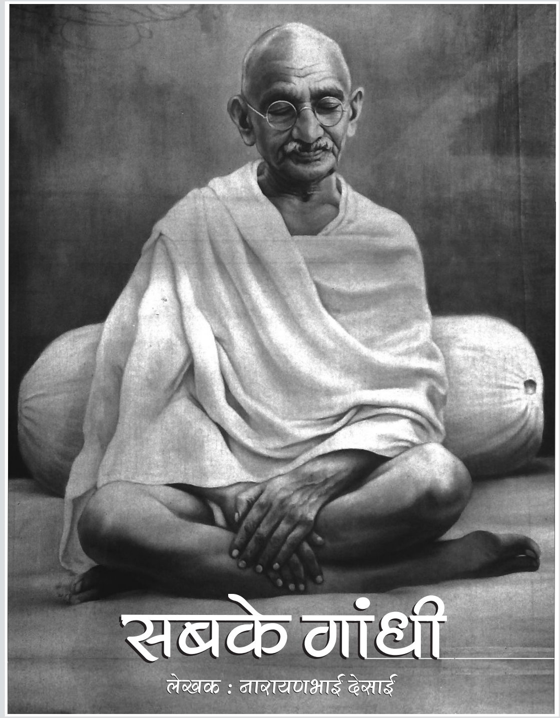
पाठकों की पिछली पीढ़ी ने भी मिलान कुंदेरा को चाव से पढ़ा।

इस लेखक की रचनाओं में जड़ों से कटने की, विस्थापन की और अकेलापन झेलने की कथा दुहराई जाती रही है। बीसवीं सदी के लेखन की यह प्रथा साहित्य जगत में अब भी जारी है। हालांकि दुनिया सिरे से बदल गई है।

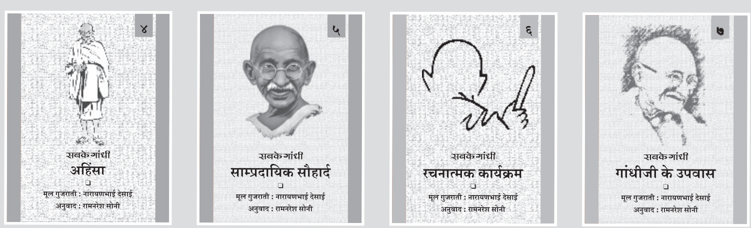
कुंदेरा ने जैसा पाठकों का भरपूर स्नेह पाया वैसा शायद साहित्य के अनेक नोबेल पुरस्कार विजेता भी नहीं पा सके। बीबीसी पर प्रियदर्शन ने उसके निधन पर लिखा: मृत्यु हमेशा दुखद है लेकिन 94 साल की उम्र में मृत्यु शोक का विषय नहीं होती।

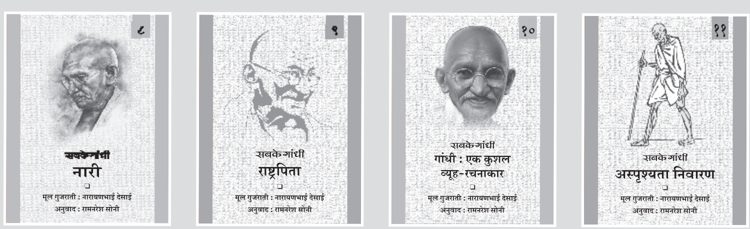
स्वत्त्वाधिकारी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा क्लासीफाइड प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित तथा
7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-302004 से प्रकाशित। संपादक- राजेन्द्र बोड़ा

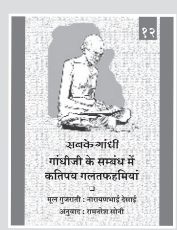
अनौपचारिका: पृष्ठ–28, अगस्त, 2023 रजिस्ट्रार ऑव न्यूज पेपर, नयी दिल्ली के द्वारा पंजीकृत मासिक पत्रिका **RNI 43602/77 ISSN No.2581-981X**













सहयोग राशि के लिए
बैंक विवरण

BANK OF BARODA
Rajasthan Adult Education Association
Branch Name : IDS Ext. Jhalana Jaipur
I.F.S.C. Code : BARB0EXTNEH
(Fifth Character is zero)
Micr Code : 302012030
Acct.No. : 98150100002077

सबके गांधी

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004

12 पुस्तकों के एक सैट की सहयोग राशि रुपये 500/– मात्र डाक खर्च अलग से देय होगा।